अंक 35

वर्ष-9वां

जुलाई-सितंबर 2015

चहकती चेतना

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

JULY - SEPT. 2015

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर
प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर
डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर
परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, कानपुर
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	संपादकीय	1
2.	आईसक्रीम के शौकीन	2
3.	सुंदरता की पहचान	3
4.	सर्कस आया	4
5.	आओ ज्ञान बढ़ायें	5
6.	रहस्य	6-8
7.	इन्हें भी सुनिये	9
8.	अब नहीं सताऊँगा	10-11
9.	देव	12
10.	राजा श्रेयांस के स्वप्न....	13
11.	श्रीमद् रायचंद और	14-15
12.	कुछ प्रमुख जीवों	16-17
13.	भरत चक्रवर्ती के	18
14.	सच्ची मित्रता	19
15.	जीने की कला	20
16.	परिणामों का फल	21-22
17.	ऐसे मनायें रक्षाबंधन	23
18.	सीख	24
19.	वे कौन थे	25
20.	स्वर्गवासी मैगी	26-27
21.	सावधान	28
22.	पतंग से हुआ नुकसान	29
23.	अब तो जरा विचार	30
24.	कॉमिक्स	31-32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

संपादकीय

प्यारे बच्चो और चहकती चेतना के पाठको,
एक बार फिर आपको प्यार और स्नेह भरा जय जिनेन्द्र।

आपकी छुट्टियों के दिन समाप्त हो गये होंगे और आप फिर से स्कूल जाने लगे होंगे। निःसन्देह आज की पढ़ाई बहुत कठिन और व्यस्त समय वाली हो गई है। स्कूल का काम, होमवर्क, ट्यूशन और आपकी हॉबी की क्लासेस सबमें इतना समय चला जाता है कि अन्य कार्य के लिये समय मिलना असम्भव सा लगता है। परन्तु आप सभी समझते होंगे कि जीवन के 21-22 वर्ष तक तक पढ़ाई की टेन्शन, उसके बाद नौकरी या व्यापार में स्थिर होना, उसके बाद शादी और फिर उसके बाद बच्चों के भविष्य की चिन्ता। जब बच्चे अपने कार्य में लग जायेंगे तो हम अपनी आतमा की चिन्ता करने लायक नहीं बचेंगे। कैसा आश्चर्य है कि संसार युवावस्था में स्वास्थ्य की परवाह किये बिना धन कमाने में लगता है और बुढ़ापे में वह सारा धन स्वास्थ्य को ठीक करने में खर्च करता रहता है इसी का नाम मोह है।

मेरा आप सबसे निवेदन है लौकिक पढ़ाई के साथ अपने जितना संभव हो सके अपना समय जिनधर्म के अध्ययन, चिन्तन में लगायें। जिनमन्दिर जायें, पूजन करें, पाठशाला जाने का प्रयास करें। यदि आपके नगर में पाठशाला न हो तो अपने घर के बड़ों को धार्मिक ज्ञान देने के लिये कहें। इससे आपको जीवन की समस्याओं में साहस और धैर्य मिलेगा और जिनधर्म की विद्या तो इस भव के लिये तो कार्यकारी है ही साथ हमारी आतमा को अनंत सुख देने वाली है।

दूसरी बात आप अपने स्कूल में भी अपने व्यवहार से सबका मन जीतना, इससे अपके अध्यापकों तो खुशी मिलेगी साथ ही आपको भी आनन्द आयेगा। आप अपने स्कूल में निम्न बातों का ध्यान रखें - 1. समय पर स्कूल जायें। 2. अपना होमवर्क समय पर पूरा करें। 3. अध्यापकों से विनयपूर्वक बात करें और कभी उनका मज़ाक न बनायें। 4.अपने स्कूल को स्वच्छ बनायें रखें। 5.अच्छे छात्रों को मित्र बनायें और स्कूल में ऐसा कोई भी कार्य न करें जिससे आपको सजा मिले। 6. दोस्ती अच्छी होने पर ही किसी का अभक्ष्य भोजन न करें। 7. अपने पुस्तकें और कॉपियाँ व्यवस्थित रखें जिससे वे खराब न हों। किसी भी पेज पर पेन न चलायें। 8. स्कूल से घर आकर अपनी ड्रेस व्यवस्थित स्थान पर रखें। 9.अपने स्कूल की हर बात को अपने मम्मी को अवश्य बतायें। 10. अपने टीचर्स की बात ध्यान से सुनें और नोट करें। 11. पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों में अवश्य सहभागिता करें। 12.स्कूल से सीधे घर आयें और किसी अजनबी व्यक्ति से बात न करें।

आपके लौकिक और धार्मिक जीवन सुन्दरता की कामना के साथ

- आपका विराग

आइसक्रीम
के शौकीन सावधान

धन कमाने के लोभ में कम्पनियाँ लोगों के स्वास्थ्य से किस तरह खिलवाड़ करती हैं इसका प्रत्यक्ष उदाहरण सामने है। आईसक्रीम की प्रसिद्ध कम्पनी क्रीमबैल के वनीला पैक को जब एक व्यक्ति ने खरीदकर खोला तो उसमें एक मरी हुई छिपकली मिली। यह छिपकली उस वनीला के ऊपर ही थी। **यदि वह न दिखती और उसे कोई खाता तो क्या होता यह आप स्वयं विचार कर सकते हैं,.... निर्णय आपके ऊपर.... स्वास्थ्य या स्वाद इनमें से आपके लिये क्या महत्वपूर्ण है.....**

फ्रूटी के सीलबंद पैकेट से बिना देखे पीने वालो
सावधान

फ्रूटी के एक पैकेट को खोलने पर उसमें से कीड़े निकले

बाजार की केमिकल वाली मेंहदी लगाने से हुआ ये हाल

सुंदरता की चाहत अभिशाप बन गई

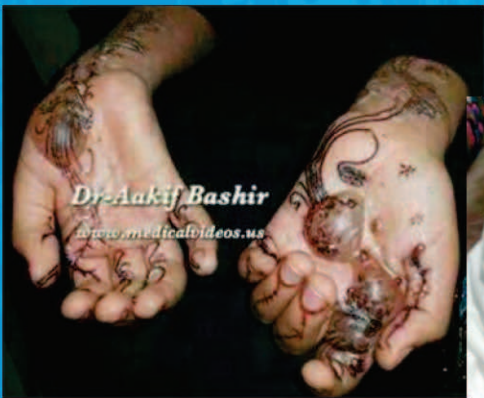

लापरवाही ने बिगाड़ दिया चेहरा

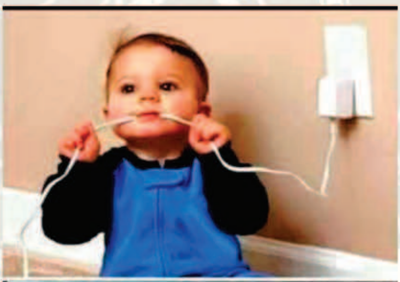

मोबाइल आज व्यक्ति की जरुरत बन गया है। भोजन के बिना तो कुछ घंटे काम चल सकता है परन्तु मोबाइल के बिना एक मिनिट भी नहीं। मोबाइल का आवश्यतानुसार उपयोग तो उचित है परन्तु इसकी लत घातक है।

साथ ही इसके उपयोग एवं चार्ज करने में बहुत सावधानी की आवश्यकता है। नीचे फोटो में देखिये एक बच्चे ने खेल-खेल में चार्ज हो रहे मोबाइल का वायर मुंह से काटा तो उसका चेहरा जल गया।

ध्यान रखिये सावधानी ही सुरक्षा का सर्वोत्तम उपाय है ...

पाप से जीव निन्दनीय होता है, पुण्य से जीव प्रशंसनीय होता है, धर्म से जीव पूज्यनीय होता है।

मेरे गांव में सरकस आया।
सब बच्चों के मन को भाया।
इसमें हाथी, घोड़े, बन्दर,
शेर दिखा पिंजरे के अन्दर।
शोर मचाते जोकर आते,
कभी हंसाते कभी रुलाते।
भालू ने करतब दिखलाये,
चिम्पाजी ने गीत सुनाये।
घोड़े ने यह पाठ पढ़ाया,
शाकाहार जगत को भाया।
आकर बोला ऊंट का बच्चा,
दिन में खाना सबसे अच्छा।
सूंड़ उठाकर बोला हाथी,
मद्य मांस न लेना साथी।
टामी कुत्ता सजकर आया,
अण्डा मांसाहार बताया।
करतब देख सभी थे दंग,
चेहरों पर छा गई उमंग।
अखिल राह आशा दिखलाई।
अब घर जाओ मेरे भाई।।

- अखिल बंसल, जयपुर

आओ ज्ञान बढ़ायें

तीर्थंकर में कितना बल होता है

- दो हजार सिंहों का बल एक अष्टापद में होता है,
- दस लाख अष्टापदों का बल एक बलदेव में होता है,
- दो बलदेवों का बल एक वासुदेव में होता है,
- दो वासुदेवों का बल एक चक्रवर्ती में होता है,
- एक करोड़ चक्रवर्ती का बल एक देव में होता है,
- एक करोड़ देवों का बल एक इन्द्र में होता है,
- ऐसे बलशाली अनन्त इन्द्र मिलकर भी तीर्थंकर प्रभु की कनिष्ठिका अंगुली को भी नहीं हिला सकते।

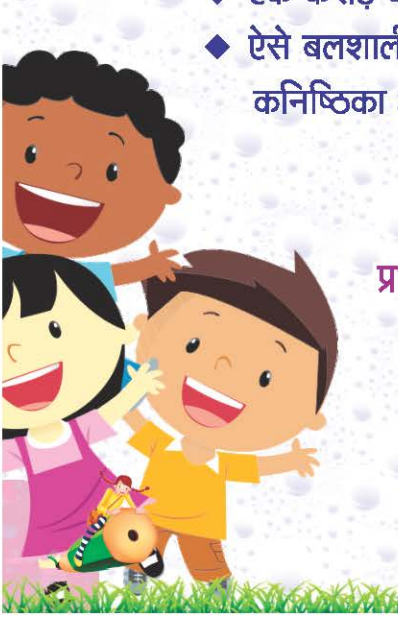

धन्य हैं तीर्थंकर
प्रभु उन्हें अपने शारीरिक बल का नहीं
बल्कि आत्मा
का बल पंसद आता है।

रहस्य

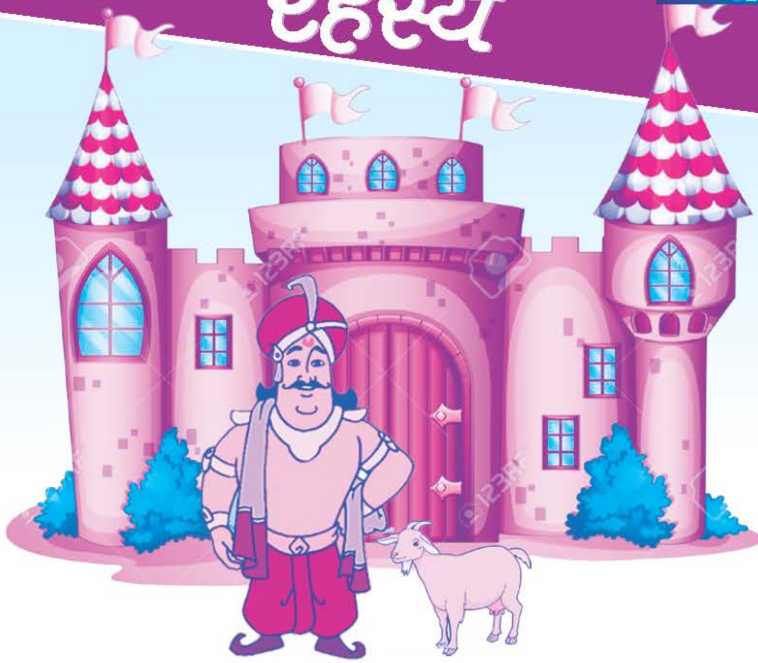

उज्जैन नगर में एक नागदत्त सेठ रहता था। उसे सात खण्ड का महल बनवाने का विचार आया और उसने कारीगरों को बुलाकर कहा कि मेरे लिये एक सात खण्ड का महल बनाओ और वह महल इतना सुन्दर होना चाहिये कि ऐसा महल पूरे राज्य में दूसरा न हो और मेरा यश सदा संसार में बना रहे।

कारीगरों ने कई वर्षों की बहुत मेहनत से सात मंजिल का राज्य का सबसे सुन्दर महल तैयार कर दिया। इसे देखने के लिये दूर-दूर से अनेक लोग आते थे। फिर नागदत्त को महल में चित्रकारी का विचार आया, उसने सैकड़ों अच्छे कलाकारों को बुलाकर पूरे महल में अत्यन्त सुन्दर चित्रकारी का कार्य प्रारम्भ करवा दिया।

नागदत्त अपने भोग-विलास में बहुत धन खर्च करता था परन्तु किसी गरीब व असहाय के द्वारा धन मांगने पर उसे बहुत अपमानित करता था। किसी धार्मिक आयोजन में इसलिये नहीं जाता था कि उसे कुछ दान पड़ेगा। लोग उसे कंजूस कहकर उसकी हमेशा बुराई करते थे। पर नागदत्त की पत्नी सरल स्वभाव की थी उसे दान करने की और गरीबों की सहायता करने की भावना रहती थी परन्तु नागदत्त के स्वभाव के कारण वह हमेशा चुप रह जाती थी।

एक दिन सेठ अपने भवन की चित्रकारी का कार्य देखकर खुश हो रहे थे तभी वहाँ एक मुनिराज निकले तो सेठ को देखकर मुस्कराये। नागदत्त ने मुनिराज को मुस्कराते देखा

थोड़ा सा धैर्य, बहुत सी मुसीबतों से बचा देता है।

तो उसे लगा कि मुनिराज के मुस्कराने का जरूर कोई कारण होगा। आज दोपहर में जाकर इसका कारण पूछूँगा।

दोपहर के समय पुनः मुनिराज सेठ के महल के सामने से निकले, उस समय सेठ अपने पुत्र को गोद में बिठाकर प्यार कर रहा था। पुत्र ने गोद में पेशाब कर दी तब भी सेठ उसे प्यार करते रहे। मुनिराज यह दृश्य देखकर फिर मुस्कराये। नागदत्त ने मुनिराज को मुस्कराता हुआ देखा तो उसे फिर कुछ रहस्य लगा।

शाम के पूर्व नागदत्त अपनी दुकान पर बैठा हुआ था तभी एक बकरा भागता हुआ आया और बैं बैं करता हुआ नागदत्त के चारों ओर चक्कर काटने लगा। तभी उस बकरे को ढूंढता हुआ कसाई आया और बकरे को सेठ के चक्कर काटता देखकर सेठ से बोला कि ये बकरा तुमसे बहुत प्रेम कर रहा है और दुकान से नहीं जाना चाहता। इस बकरे की कीमत तुम मुझे दे दो और बकरा ले लो।

सेठ ने सोचा - यह कसाई मुझे फंसा रहा है और मुझसे धन लेना चाहता है। वह बकरा कसाई की पकड़ में नहीं आ रहा था। वह लगातार कसाई से बचने का प्रयास कर रहा था। सेठ ने स्वयं ही डण्डा लेकर उस बकरे को तीन-चार डण्डे मारे तो वह बकरा दुकान के बाहर आ गया और चिल्लाता हुआ कसाई के साथ चलने लगा।

इसी समय मुनिराज नगर के जिनमन्दिरों के दर्शन करके लौट रहे थे उन्होंने से कसाई को बकरा खींचता हुआ देखा और बकरे को सेठ की ओर देखकर फिर से मुस्कराये। नागदत्त ने मुनिराज को मुस्कराता हुआ देखा तो विचार करने लगा कि मुनिराज आज तीन बार मुस्कराये हैं। इसका कारण पूछता हूँ।

नागदत्त मुनिराज के पास गया और नमोस्तु करके पूछा - प्रभो! आज तीन बार मुझे देखकर मुस्काराये तो इसका क्या कारण है ?

मुनिराज बोले - पहली बार जब तुम चित्र देख रहे तो तब यह सोचकर मुस्कराया कि तुम इन चित्रों के पूरे होने के पहले ही मरण को प्राप्त हो जाओगे।

सेठ ने पूछा कि हे मुनिवर ! मेरी आयु कितनी शेष है

मुनिराज बोले - हे वत्स ! तुम्हारी आयु मात्र सात दिन शेष है और जब दूसरी बार जब तुम्हारे पुत्र ने तुम्हारे ऊपर पेशाब कर दी और तुम उसे प्यार करते रहे जबकि यह तुम्हारे पूर्व जन्म का शत्रु है और यह जुआरी और व्यसनी होगा और तुम्हारी मेहनत की सारी सम्पत्ति नष्ट कर देगा।

नागदत्त ने पूछा - हे प्रभो! आप तीसरी बार क्यों मुस्कराये?

मुनिराज बोले - हे भव्य! वह बकरा कसाई से बचने के लिये तुम्हारे आस-पास चक्कर लगा रहा था। पर तुमने उसे डण्डे मारकर भगा दिया। वह बकरा तुम्हारे पिता का जीव था। जब वह तुम्हारी दुकान के सामने से निकला उसे याद आ गया और तुम्हारे पास आकर बचने का प्रयास करने लगा।

मुनिराज के वचन सुनकर नागदत्त दौड़ा-दौड़ा कसाई के पास गया और उस कसाई से कहा - भाई! जो मूल्य चाहिये ले लो परन्तु वह बकरा मुझे दे दो। कसाई बोला - मैंने अभी थोड़ी देर पहले उसे काट दिया। कसाई की बात सुनकर नागदत्त को बहुत दुःख हुआ।

वह वापिस आकर मुनिराज के पास पहुँचा और कहने लगा कि हे ज्ञानी मुनिवर! कल्याण का क्या मार्ग है ?

मुनिवर ने अपनी मधुर वाणी से कहा - अपनी आत्मा को जानना ही एक मात्र कार्य है। ये जीवन का समय भोग भोगने के लिये नहीं बल्कि आत्मकल्याण के लिये मिला है।

नागदत्त को वैराग्य हो गया, उसने मुनिदीक्षा ले ली और घोर तप किया। पांचवे दिन उसे मस्तक में भयंकर दर्द हुआ, परन्तु वह उसे शान्तभाव से सहन करता रहा। सातवें दिन समाधि की अवस्था में ही हृदय की गति रुक गई और उसका देहावसान हो गया। नागदत्त मरकर वैमानिक देव बन गया।

अहो ! मुनिराज की थोड़े समय की संगति ने ही उसका कल्याण कर दिया।

जन्म दिवस

स्वयं रचित यह विश्व है, करे स्वयं हर काम।
रचित स्वयं को जानकर, स्वयं बनो भगवान।।
भेद ज्ञान प्रज्ञा धरो, हो कांति भरपूर ।
मिथ्यातम रजनी टले, रहना दुख से दूर ।।

रचित कान्ति जैन, दुर्ग 18 जुलाई 2015

स्वयं बली यह आत्मा, करे कर्म विध्वंस।
अभिषेक ऐसा कार्य करो, नाशो कर्म कलंक।।

अभिषेक जैन, पुणे 18 सितम्बर 2015

दूसरे को अपने अनुसार चलाने की भावना का फल निगोद है।

इन्हें भी सुनिये ....

आंखों से

भक्ति से भगवान को देखूँ।
आदर से गुरुओं को देखूँ।
छोटों को स्नेह से देखूँ।
दुखियों को करुणा से देखूँ।
पर वस्तु को पर ही देखूँ।
लड़कों को भाई सम देखूँ।
हर लड़की को बहन बराबर।
बुरे भाव से कभी न देखूँ।
बैठ कभी अन्तर में देखूँ।
अपने परमातम को देखूँ।।

मुख से

सच्ची प्यारी बात कहूँगा।
निन्दा चुगली नहीं करुँगा।
नहीं किसी की हंसी उड़ाऊँ।
सुन्दर गीत भजन मैं गाऊँ।
आदर और विनय से बोलूँ।
सोच समझ
अपना मुख खोलूँ।

कान से

गन्दी बातें नहीं सुनूँगा।
निन्दा, चुगली नहीं सुनूँगा।
सदा बड़ों की बात सुनूँगा।
दुखियों की पुकार सुनूँगा।
गुरुओं का उपदेश सुनूँगा।
अवसर पर ललकार सुनूँगा।
अच्छे-अच्छे काम करुँगा।
नहीं कभी फटकार सुनूँगा।।

पैरों से

धर्म कार्य में दौड़ा जाऊँ।
सेवा करने दौड़ा जाऊँ।
बड़े पुकारें जल्दी जाऊँ।
दुःखी पुकारें जल्दी जाऊँ।
नहीं किसी को ठोकर मारुँ।
नहीं चलूँगा टेढ़ी चाल।
कोई प्राणी दुःख न पाये।
पाँव रखूँगा सदा संभाल।।

रचनाकार - बा.ब्र. रवीन्द्र जी

6

अब नहीं सताऊँगा

विधान को दूसरों को सताने में बड़ा मजा आता था, जब भी कोई व्यक्ति, जानवर, पक्षी या कोई भी जीव परेशान होता तो उसे बहुत आनन्द आता था। वह कभी कुत्ते की पूंछ में रबर बांध देता, कभी चींटी को परेशान करने के लिये उसके चारों ओर पानी का घेरा बना देता, कभी छिपकली को परेशान करने के लिये रुई को गीली करके दीवाल पर मारता, जिससे वह रुई दीवाल पर चिपक जाती और छिपकली उसे कीड़ा समझ खा लेती थी, कभी गाय की पूंछ खींच कर भाग जाता।

किसी गरीब भिखारी के कटोरे में पत्थर डालना, किसी के गिरने पर जोर-जोर से हंसने में उसे बहुत आनन्द मिलता था। उसकी माँ सोचती - पता नहीं किस गति से आया है और कैसे संस्कार लेकर आया है ..। वह उसे समझाते हुये कहती कि विधान ! तुम जानते हो, तुम्हारी इन आदतों से कितना पाप बन्ध होता है, अभी कुछ पता नहीं पड़ेगा जब उदय में आयेगा तो तब दुःखी होगे। पर उसे इन बातों से कोई असर नहीं पड़ता था।

विधान के पिता भी उसकी इन गन्दी आदतों से बहुत परेशान थे, वे विधान को समझाने का बहुत प्रयास करते थे परन्तु वह उनकी बात ही नहीं मानता था। कई बार पिता ने उसे मारा भी, पर वह हमेशा अब नहीं करूँगा - कहकर क्षमा मांग लेता और कुछ दिन बाद फिर परेशान करने लगता। यदि कोई उसे समझाने का प्रयास करता तो वह उससे झगड़ा कर लेता। मारपीट के डर से कोई भी छात्र उसकी टीचर से उसकी शिकायत नहीं करता था।

एक दिन जब विधान अपने दोस्त के घर जा रहा था और हमेशा की तरह यहाँ-वहाँ देखते हुये लापरवाही से चला जा रहा था। रविवार का दिन होने से रास्ते के नालों की सफाई के लिये गटर के मेन होल खुले हुये थे और सफाईकर्मी थोड़ी ही दूरी पर कार्य कर रहे थे। तभी विधान का पैर उस मेन होल में चला गया और वह नीचे गिर गया। नीचे जाकर उसका पैर जाली में फंस गया, वह घबरा गया, उसने नीचे से ही जोर से आवाज लगाई परन्तु उसकी आवाज ऊपर तक नहीं पहुँच पा रही थी। दूसरी ओर गन्दे पानी की बदबू उसे परेशान कर रही थी। वह जोर-जोर से रोने लगा।

उसे अपने आप ही अपनी वे घटनायें याद आने लगीं जिसमें वह जीवों को परेशान करके आनन्द मानता था। उसे लगा मैं आज संकट में हूँ तो मुझे कितनी पीड़ा हो रही है परन्तु जिन जीवों को मैंने परेशान किया वो भी दुःखी हुये होंगे और उनमें से कितने ही जीव मर गये। ऐसा विचार करते हुये उसे और अधिक रोना आ गया। उसे वहाँ गिरे हुये लगभग 1 घंटा होने वाला था उसे लगने लगा कि शायद आज मैं यहीं पर मर जाऊँगा। वह अपने किये पापों की क्षमा मांगने लगा और उसने संकल्प किया यदि उसके प्राण बच जायेंगे तो जीवन में किसी भी जीव को परेशान नहीं करूँगा। अब उसकी चिल्लाने की ताकत भी कम हो रही थी, उसे बेहोशी सी लगने लगी, वह मन ही मन लगातार अरिहंत सिद्ध का नाम बोले जा रहा था। अचानक उसे कोई व्यक्ति नीचे आता दिखा।

सफाई कर्मचारी सीढ़ी लगाकर सफाई करने नीचे आ रहा था, उसने देखा कि विधान बेहोश होने वाला है और उसका पैर जाली में फंसा हुआ है। वह तुरन्त नीचे आया और विधान को संभालते हुये अपने साथियों को आवाज दी। उसकी आवाज सुनकर उसके साथी नीचे आये और सावधानी से विधान को ऊपर निकालकर लाये तब तक वह बेहोश हो चुका था। उसे तुरन्त हॉस्पिटल ले जाया गया और सामान्य उपचार के बाद उसे होश आ गया। विधान के माता-पिता को फोन पर जानकारी देकर बुलाया गया। मम्मी ने उसे गले से लगाकर घटना के बारे में पूछा तो विधान कुछ बोल ही नहीं पा रहा था, उसकी आंखों से लगातार आंसू बह रहे थे। शायद उसके प्रायश्चित के आंसू थे। अगले दिन जब वह स्कूल गया तो उसने किसी को परेशान नहीं किया, उसका बदला हुआ व्यवहार देखकर अध्यापक और कक्षा के साथी आश्चर्यचकित थे।

लेकिन विधान आज बहुत प्रसन्न था। उसे लगा कि आज उसे सच्चा आनन्द मिल गया है।

- विराग शास्त्री

इच्छायें

नंगे पांव चलते इन्सान को लगता है कि
चप्पल होती तो कितना अच्छा होता, बाद में
साइकिल होती तो कितना अच्छा होता, उसके बाद
बाइक होती तो कितना अच्छा होता बातों-बातों में रास्ता कट जाता
फिर ऐसा लगता है कि कार होती तो धूप नहीं लगती
फिर लगता है कि हवाई जहाज में यात्रा होती तो समय भी बचता
जब हवाई जहाज में बैठकर नीचे हरे-भरे घास के मैदान देखता है तो
सोचता है कि नंगे पांव घास पर चलता कितनी शांति मिलती
सार ये है जरूरत के अनुसार जिन्दगी जियो इच्छाओं के अनुसार नहीं
क्योंकि जरूरत फकीरों की पूरी हो जाती हैं
और इच्छायें बादशाहों की भी पूरी नहीं होती।

अनोखी बातें- देव

जिनागम में चार गतियों का वर्णन किया गया है। मनुष्य, तिर्यन्च, देव और नरक गति।

देव गति के में चार प्रकार के देव होते हैं। 1. वैमानिक 2. ज्योतिषी 3. व्यन्तर 4.भवनवासी।

देवों की विशेषतायें -

1. देवों का आहार अमृत का होता है, किन्तु नीहार मल-मूत्र , पसीना एवं सप्तधातुयें नहीं होती हैं।
2. देवों के शरीर में बाल नहीं होते और उनके शरीर में निगोदिया जीव भी नहीं होते एवं शरीर वैक्रियिक होता है।
3. देवों के शरीर की परछाईं नहीं पड़ती हैं और पलकें नहीं झपकती हैं।
4. देवों का समचतुरस्रसंस्थान (शरीर समान अंग वाला) ही होता है किन्तु उनके कोई संहनन नहीं होता है।
5. देवों का अकालमरण (अचानक, फांसी, दुर्घटना आदि से) नहीं होता है।
6. देवों का जन्म उपपाद शय्या पर होता है एवं अर्न्तमुहूर्त में छः पर्याप्तियाँ पूर्ण कर 16 वर्षीय नवयुवक को समान हो जाते हैं एवं बुढ़ापा भी नहीं आता है।
7. सम्यग्दृष्टि देव स्वर्गों में प्रतिदिन अभिषेक-पूजन करते हैं एवं पुराने देव (सीनियर) के कहने से मिथ्यादृष्टि देव भी जिनेन्द्र भगवान की कुलदेवता मानकर अभिषेक पूजन करते हैं।(त्रिलोक सार 551-553)
8. एक देव की कम से कम 32 देवियाँ होती हैं।
9. चारों प्रकार के देव तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों में आते हैं किन्तु सोलहवें स्वर्ग के ऊपर वाले देव अहमिन्द्र देव वहीं से नमस्कार करते है और पन्चम स्वर्ग के लौकान्तिक देव मात्र तीर्थंकर के दीक्षा कल्याणक में वैरागी तीर्थंकर के वैराग्य की अनुमोदना करने के लिये आते हैं।
10. देवों को शीरीरिक रोग नहीं होते।
11. देवों में स्त्री-पुरुष दो वेद होते हैं।
12. देवों को चिन्तन करने मात्र सभी प्रकार की भोग सामग्री 10 प्रकार के कल्पवृक्षों से प्राप्त हो जाती है।

राजा श्रेयांस के स्वप्न व फल

एक दिन राजा श्रेयांस को रात्रि में सात स्वप्न आये वे राजा सोमप्रभ के पास पहुँचे और उनसे निवेदन किया कि हे भाई ! आज रात्रि को मैंने उत्तम-उत्तम सात स्वप्न देखे हैं। आप सुनें -

1. स्वर्णमय सुमेरुपर्वत देखा।
2. कल्पवृक्ष की शाखाओं पर आभूषण लटक रहे हैं।
3. एक विशाल सिंह जो अपनी जीभ बाहर निकाल रहा है।
4. अपने सींग से मिट्टी निकालता हुआ बैल।
5. सूर्य और चन्द्रमा।
6. रत्न राशि से भरा लहरों से युक्त सागर।
7. अष्ट मंगल द्रव्यों को लेकर खड़ी हुईं व्यंतर देवों की मूर्तियाँ।

तब राजा सोमप्रभ ने इन स्वप्नों का मंगल फल बताने के लिये पुरोहित से निवेदन किया। तब पुरोहित ने स्वप्नों के फल का सार बताया - कि जिस महापुरुष का मेरू पर्वत पर अभिषेक हुआ है, जो महान पुण्य का धारी है, जो अत्यंत वीर है, जो संसार को उखाड़ने अर्थात् नष्ट करने में समर्थ है, जो स्वर्ग लोक से आया है, जिसमें सागर जैसी गहराई है और अनंत गुणों से सुशोभित है ऐसा महापुरुष हमारे घर आने वाला है।

और उनके घर में योगीराज मुनि ऋषभदेव आहार हेतु पधारे।

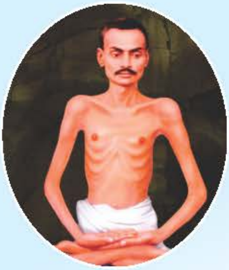

श्रीमद् राजचन्द एवं महात्मा गांधी

श्रीमद् राजचन्द्र सौराष्ट्र के एक प्रसिद्ध जैन संत थे। उन्होंने अपनी अपनी अल्प आयु में ही अध्यात्म का स्पर्श किया और अपनी आध्यात्मिक रचनाओं के माध्यम से स्वाध्यायी समाज को अनुपम भेंट दी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी श्रीमद् राजचन्दजी से बहुत प्रभावित थे।उन्होंने अपने लेख में श्रीमद् के बारे में विस्तृत उल्लेख किया है।

महात्मा गांधी के शब्दों में -

प्रथम मुलाकात और उनका प्रभाव - राजचन्द भाई से मेरी मुलाकात 1891 में हुई। जब मैं विदेश से मुम्बई वापस आया तो मैं डाक्टर बैरिस्टर और रंगून के प्रख्यात जवेरी प्राणजीवन दास मेहता के घर पर हुई। तब श्रीमद्जी वहीं पर थे और डॉक्टर साहब ने राजचन्द का परिचय कवि के रूप में कराया और बताया कि राजचन्दजी हमारे व्यापार में सहयोगी होने के साथ ज्ञानी और शतावधानी (100 वस्तुओं के नाम एक बार सुनने के बाद अपनी स्मृति के बल से उन्हें ज्यों के त्यों उसी क्रम में दोहराना) हैं। मुझे उस समय अपनी विदेशी शिक्षा का बहुत अभिमान था। ऐसा लगता था कि मैं आकाश से उतरा हूँ। डाक्टर साहब के अनुरोध पर मैंने उनकी परीक्षा लेने के लिये मैंने अलग-अलग भाषाओं के कठिन शब्द पहले पेपर पर लिख लिये और उन शब्दों को श्रीमद् के सामने सुनाया। पर श्रीमद् ने उन अनेक भाषाओं के शब्दों को बिना रुके ही ज्यों का त्यों सुना दिया। उस समय में आश्चर्यचकित हुआ और मेरा अभिमान टूट गया।

स्मरण शक्ति - श्रीमद् को अंग्रेजी का ज्ञान बिल्कुल नहीं था और गुजराती का भी थोड़ा ही अभ्यास किया था। परन्तु उनकी स्मरण शक्ति अद्भुत थी। इतनी शक्ति और ज्ञान होने के बाद भी श्रीमद् को जरा भी मान नहीं था। शास्त्र ज्ञान तो बहुत व्यक्तियों को होता है परन्तु संस्कार न हों तो तो वह अभिमानी बन जाता है। श्रीमद्जी संस्कारी ज्ञानी थे।

दुनिया के 99 प्रतिशत लोग अपनी न चलने से दुःखी हैं।

सदा सावधान - श्रीमद्जी हीरे-जवाहरात का व्यापार करते थे। हजारों का व्यापार करना, हीरे की परख करना, व्यापार की समस्यायें सुलझाना और इसके बाद भी समय मिलते ही दुकान पर ही स्वाध्याय प्रारंभ कर देना उनकी विशेषता थी। लाखों के व्यापार करने के तुरन्त बाद आत्मा की सूक्ष्म बातें करने की विशेषता श्रीमद् में थी।

श्रीमद् से मिलने के बाद मैं अनेकों धर्म आचार्यों के सम्पर्क में आया परन्तु जो बात श्रीमद् में थी वह किसी में नहीं मिली। मैं अपनी आध्यात्मिक कठिनाईयों के समय उनकी सहायता लेता था।

गहरा प्रभाव - मेरे ऊपर तीन पुरुषों ने गहरा प्रभाव डाला है - अंग्रेजी लेखक टॉलस्टाय, रस्किन और राजचन्दभाई। मैंने सत्य धर्म को जानने के लिये अनेक धर्म ग्रन्थों का अध्ययन किया परन्तु जो सत्यता मुझे श्रीमद्जी के द्वारा बताये धर्म में दिखी वह कहीं नहीं दिखी। श्रीमद्जी से मेरा निकट का सम्बन्ध था। मेरे जीवन पर श्रीमद् का कितना प्रभाव है मैं इसका वर्णन नहीं कर सकता। पूरे भारत में श्रीमद् के बराबर का कोई संत नहीं है। उनका ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, अध्यात्म, जीवन सब अद्भुत हैं ।

मैंने अपने जीवन में बहुतों से बहुत कुछ ग्रहण किया है परन्तु मैंने अपने जीवन में सबसे ज्यादा किसी से ग्रहण किया है तो वह हैं कवि श्रीमद् राजचन्दजी।

साभार - ' मेरे समकालीन' लेख संग्रह लेखक - महात्मा गांधी
प्रकाशक - सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली
संकलन - विद्वत् रत्न पण्डित हीरालालजी जैन 'कौशल'

जैन समाज के लिये गौरव के क्षण

यद्यपि भारत में जैन समाज की जनसंख्या बहुत कम है परन्तु भारत सरकार द्वारा इस वर्ष घोषित पद्म पुरस्कारों में 6 जैन समाज की विभूतियों को प्राप्त हुये हैं। राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने एक विशेष समारोह में इन महानुभावों को पद्म पुरस्कारों से सन्मानित किया।

1. पद्म विभूषण - डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े, कर्नाटक
2. राहुल जैन संगीतकार
3. श्री रवीन्द्र जैन, फिल्म संगीतकार
4. श्री संजय लीला भंसाली, फिल्म निर्देशक
5. श्री वीरेन्द्र राज मेहता, फिल्म निर्देशक
6. तारक मेहता, लेखक
7. मीठालाल मेहता, लेखक

इससे पूर्व वैज्ञानिक श्री विक्रम भाई सारा मेहता, श्री बनारसीदासजी, टाइम्स ऑफ इण्डिया के चेयरमेन श्री विनीत जैन, साहू रमेशचन्दजी को भी सन्मानित किया गया है।

कुछ प्रमुख जीवों की वर्तमान पर्याय एवं भविष्य की स्थिति

1.	24 तीर्थंकर	-	उसी भव से मोक्ष जाने वाले
2.	तीर्थंकर के पिता	-	स्वर्ग या मोक्ष
3.	तीर्थंकर की माता	-	स्वर्ग
4.	9 नारायण	-	नियम से नरक
5.	9 प्रतिनारायण	-	नियम से नरक
6.	9 बलभद्र	-	स्वर्ग या मोक्ष
7.	12 चक्रवर्ती	-	स्वर्ग, नरक या मोक्ष
8.	24 कामदेव	-	स्वर्ग या मोक्ष
9.	14 कुलकर	-	स्वर्ग
10.	9 नारद	-	नरक
11.	11 रुद्र	-	नरक
12.	दशरथ-कौशल्या कैकई-सुमित्रा-सुप्रभा राजा जनक	-	13 वें स्वर्ग में
13.	भामण्डल	-	देवकुरु भोग भूमि में
14.	राम	-	मोक्ष
15.	भरत	-	मोक्ष
16.	लक्ष्मण	-	वर्तमान में नरक - भविष्य में पुष्कर द्वीप के महाविदेह में तीर्थंकर
17.	शत्रुघ्न	-	मोक्ष
18.	सीता	-	16 वें स्वर्ग में प्रतीन्द्र देव। भविष्य में रावण के तीर्थंकर बनने पर उनके गणधर बनकर मोक्ष जायेगा।
19.	लव-कुश	-	मोक्ष

20.	हनुमान-कुम्भकरण मेघनाथ-इन्द्रजीत	-	मोक्ष
21.	मन्दोदरी	-	स्वर्ग में
22.	बालि - कैलाश पर्वत से	-	मोक्ष
23.	युधिष्ठिर-भीम-अर्जुन	-	मोक्ष
24.	नकुल - सहदेव	-	सर्वार्द्धसिद्धि और अगले में भव में मोक्ष।
25.	कृष्ण	-	तीसरे नरक में, सात सागर की आयु पूर्ण करके भरत क्षेत्र में 16 वें तीर्थंकर श्री निर्मलजी होंगे।
26.	जरत्कुमार	-	नरक
27.	गजकुमार	-	मोक्ष
28.	द्वीपायन मुनि	-	स्वर्ग
29.	कंस	-	नरक
30.	देवकी	-	स्वर्ग
31.	रुक्मणी,सत्यभामा आदि कृष्ण की 8 रानियाँ	-	स्वर्ग। वहाँ से आयु पूर्ण कर मनुष्य पर्याय से मोक्ष जायेंगी।
32.	द्रोपदी	-	स्वर्ग
33.	प्रद्युम्नकुमार - कृष्ण के पुत्र	-	मोक्ष
34.	सुकुमाल	-	सर्वार्थ सिद्धि
35.	श्रेणिक	-	नरक में और भविष्य में अगली चौबीसी में श्री महापद्म नामक प्रथम तीर्थंकर होंगे।
36.	चेलना	-	स्वर्ग में
37.	मैनासुन्दरी	-	सोलहवें स्वर्ग में स्वर्ग की आयु पूर्ण करके मनुष्य गति से मोक्ष जायेंगी।
38.	श्रीपाल	-	मोक्ष
39.	विभीषण	-	13वें स्वर्ग में

विज्ञान की बातें

Did You Know

There are more small living organisms in a tables Spoon of soil than there are people living on the Earth.

क्या आप जानते हैं कि एक छोटी चम्मच मिट्टी में इतने सूक्ष्मजीव हैं जितनी जनसंख्या संसार में मनुष्यों की है अर्थात् एक चम्मच में सात अरब जीव।

नाम की भूख, बदनाम कर देती है।

भरत चक्रवर्ती 16 के स्वप्न और उसका फल

1. **पर्वत पर स्थित 23 सिंह** - महावीर के अतिरिक्त 23 तीर्थंकर के समय में मिथ्यामत का अभाव।
2. **सिंह के पीछे हिरणों का समूह** - महावीर के समय में मिथ्या मत का उत्पत्ति
3. **बहुत बोझ से झुका हुआ घोड़ा** - पंचम काल में साधु समस्त गुणों को धारण करने में असमर्थ होने लगेंगे।
4. **सूखे पत्ते खाते हुये बकरे** - आगामी काल में दुराचारी मनुष्यों की उत्पत्ति
5. **हाथी के ऊपर बैठा बन्दर** - क्षत्रिय वंश नष्ट हो जायेंगे और निम्न जाति के लोग शासन करेंगे।
6. **उल्लू को सताते हुये कौओ** - धर्म की इच्छा से मनुष्य अन्य मत वालों के पास जायेंगे।
7. **नाचते हुये भूत** - पंचम काल में व्यन्तरों की पूजा होगी।
8. **एक सरोवर जो बीच में सूखा है और किनारे पानी भरा है** - तीर्थ क्षेत्रों पर साधर्मी कम ही निवास करेंगे।
9. **धूल से भरी हुई रत्नों की राशि** - पंचम काल में ऋद्धिधारी मुनियों का अभाव होगा।
10. **पूजा के द्रव्य को खाता हुआ कुत्ता** - गुणवान साधर्मियों का अपमान होगा।
11. **ऊँची आवाज करते हुये बैल** - युवावस्था में धर्मसाधना होगी, वृद्ध अवस्था में शिथिलता आयेगी।
12. **परिमण्डल से घिरा हुआ चन्द्रमा** - मुनियों के अवधिज्ञान, मनःपर्यय ज्ञान का अभाव होगा।
13. **शोभारहित दो बैल** - मुनिगण समूह में ही रहेंगे अर्थात् एकल विहारी मुनियों का अभाव होगा।
14. **बादलों से ढका हुआ सूर्य** - पंचम काल में भरत क्षेत्र में केवलज्ञानी नहीं होंगे।

सच्ची मित्रता

विदेहक्षेत्र की प्रभाकरी नगरी में अपराजित बलदेव और वासुदेव अनन्तवीर्य दोनों भाई सुखपूर्वक राज्य करते थे। एक बार बलदेव की पुत्री कुमारी सुमति के विवाह की तैयारियाँ चल रहीं थीं। भव्य विवाह मण्डप के बीच सुमतिकुमारी सुन्दर शृंगार करके आई थी। उसी समय एक देवी आकर सुमतिकुमारी से कहने लगी - हे सखी! सुन ! मैं तेरे ही हित की बात कहती हूँ। मैं स्वर्ग की देवी हूँ और तू भी पूर्व भव में एक देवी थी और हम दोनों सहेलियाँ थीं। एक बार हम दोनों नन्दीश्वर जिनालय की पूजा करने गये थे, इसके बाद हम दोनों ने पंचमेरु जिनालयों की वन्दना भी की थी। वहाँ हमने एक ऋद्धिधारी मुनिराज ने धर्मोपदेश के समय हमने उनसे पूछा था कि हे स्वामी ! इस संसार से हम दोनों की मुक्ति कब होगी ?

तब मुनिराज ने कहा था कि तुम चौथे भव से मुक्ति प्राप्त करोगी।

हे सुमति! यह सुनकर हम दोनों अति प्रसन्न हुये थे और हम दोनों ने मुनिराज के सामने एक-दूसरे को वचन दिया था कि हममें से जो पहले मनुष्य गति में जन्म लेगा उसे दूसरी देवी सम्बोधनकर आत्महित की प्रेरणा देगी, इसलिये हे सखी! मैं उस वचन का पालन करने स्वर्ग से यहाँ आई हूँ, तू इन विषय-भोगों में मत पड़ और संयम धारण कर आत्महित कर। हमने ऐसे भोग अनन्तों बार भोगे हैं फिर भी हमें शान्ति प्राप्त नहीं हुई। यह विषयों की भयंकर अग्नि है। जरा अपने आत्मकल्याण का विचार तो करो।

विवाह मण्डप के बीच देवी की यह बात सुनकर सुमतिकुमारी को पूर्व भव का स्मरण हो गया और उसे वैराग्य हो गया। उसने अन्य सातसौ राजकन्याओं के साथ सुवृता नाम की आर्यिका के पास जाकर आर्यिका दीक्षा ग्रहण की, राजकुमारी के वैराग्य की बात सुनकर चारों ओर आश्चर्य फैल गया। बलदेव का चित्त भी संयम लेने का हुआ परन्तु भाई के अति प्रेम के कारण मुनिदीक्षा नहीं ले सके।

इधर बाद में सुमति आर्यिका ने समाधिमरण पूर्वक तेरहवें स्वर्ग में देव पर्याय प्राप्त की।

सहयोग प्राप्त - श्री प्रसंग जैन, खण्डवा आर्यन अरुण जैन, चेन्नई
डॉ.रवीश जैन- श्रीमति शैली जैन,सनावद

जीने की कला

एक विद्वान ने अपने श्रोताओं के सामने एक प्रयोग किया। उसने पानी से भरा गिलास उठाया। सभी ने सोचा कि अब गिलास कितना भरा और कितना खाली प्रश्न पूछा जायेगा।

तभी विद्वान ने पूछा कि इस गिलास में कितने वजन का पानी होगा ?

सभी ने कहा - लगभग 300-400 ग्राम पानी होगा।

विद्वान ने कहा - कुछ भी वजन मान लो, इससे फर्क नहीं पड़ता।

प्रश्न यह है कि हम इसे कितनी देर तक उठाये रख सकते हैं ? यदि मैं इस गिलास को एक मिनिट तक उठाये रखता हूँ तो कोई तकलीफ नहीं होगी।

इसे मैं एक घंटे तक उठाये रखूँ तो हाथ में दर्द होने लगेगा, शायद हाथ भी अकड़ जाये।

इससे अधिक देर उठाये रखने में हो सकता है कि हाथ पेरालाईज लकवा हो जाये और फिर मैं हाथ भी नहीं हिला पाऊँगा। लेकिन इन तीनों परिस्थितियों में पानी का वजन न कम हुआ न ज्यादा।

जीवन में समस्यायें, चिन्ता या दुःख की यही कहानी है। यदि आप इन्हें एक मिनिट में अपने मन से निकाल देंगे तो शायद कुछ नहीं होगा।

यदि आप इन्हें एक घंटे तक अपने मन में रखेंगे तो आप दर्द और परेशानी का अनुभव करेंगे।

यदि आप इनका हर समय चिन्तन करेंगे तो हमारा सारा जीवन इनकी चिन्ता में बरबाद हो जायेगा।

इन सभी परिस्थितियों में चिन्ता, दुःख या समस्या कम नहीं होने वाली बल्कि इनकी चिन्ता में भयंकर असाता कर्म का बंध होगा जो बाद में और अधिक दुःखदायी होगा। इसलिये दुःखों को अपने मन में अधिक देर तक स्थान न दें बल्कि जिनवाणी के चिन्तन से, पंचपरमेष्ठी के स्मरणपूर्वक अपने मन को निर्मल करने का प्रयास करें। यही जीवन जीने की कला है।

परिणामों का फल

एक बैल था। वह प्रतिदिन गन्ने से भरी बैलगाड़ी लेकर जाता था। किसी साधु के दर्शन करने पर उसे अद्भुत आनन्द मिलता था। जिनमंदिर के सामने से निकलने पर जिनेन्द्र भगवान को वह एकटक देखता था। कभी-कभी उसकी आंखों में आंसू आ जाते थे। जिनमंदिर के सामने पहुँचकर उसके कदम आगे ही नहीं बढ़ते थे। जब उसका मालिक किसान उसे आगे बढ़ने के लिये डण्डा मारता तो उसे लगता कि एक जिनेन्द्र देव ही शरण स्थली है। उसकी आंखों में दीनता दिखने लगती थी। वह विचार करता कि मैं कब इस दुःख से मुक्त होऊँगा ?

बैलगाड़ी का मालिक किसान भी बैल की प्रतिक्रिया देखकर आश्चर्यचकित होता था। एक बार फिर बैल को जंगल के रास्ते में दिगम्बर मुनिराज के दर्शन हुये, सदा की भांति वह मुनिराज को देखकर रुक गया और मुनिराज को टकटकी लगाकर देखने लगा, उसकी आंखों से लगातार आंसू बहने लगे। यह देखकर उसका मालिक मुनिराज के पास पहुँचा और हाथ जोड़कर विनयपूर्वक पूछा - हे मुनिवर! यह मेरा बैल जिनमंदिर को और आप जैसे मुनिराजों को देखकर रुक क्यों जाता है और इसकी आंखों से आंसू क्यों गिरने लगते हैं ? आप तो ज्ञानी हैं, कृपया मुझे इसका रहस्य समझाइये।

मुनिराज ने अत्यंत गम्भीर वाणी में कहा - हे भव्य! यह बैल पूर्व भव में एक सेठ था। इसने वैराग्य धारण करके दिगम्बर मुनि दीक्षा ली थी। परन्तु जब भी यह गन्ने के पेड़ देखता था तो बहुत आनन्दित होता था। एक बार यह गन्ने के पेड़ देखकर आनन्दित रहा था और इसकी मृत्यु हो गई। दुर्भाग्यवश यह गन्ने की तीव्र आसक्ति के कारण आत्मध्यान भूल गया और आर्त परिणामों के फल में इसे गन्ने के खेत में ही बैल की पर्याय में ही जन्म लिया। लेकिन पूर्व भव के संस्कारों के कारण इसे जिनमंदिर और मुनिराजों के प्रति अत्यंत भक्ति परिणाम आता है।

किसान ने पूछा- हे मुनिवर! इस बैल के जीव का कल्याण कब होग?

मुनिवर बोले - इस जीव को अपने परिणामों का प्रायश्चित हो रहा है। इसका शीघ्र ही कल्याण होगा।

मुनिराज की मुद्रा देखते हुये बैल को जातिस्मरण हो गया और उसे अपने पूर्व भव का अपराध याद आ गई। उसे सम्यग्दर्शन हो गया, उसने उसी दिन से आहार-पानी का त्याग कर दिया और निरन्तर पंचपरमेष्ठी का स्मरण करते हुये उसकी मृत्यु हो गई। उसे देव पर्याय प्राप्त हुई।

बच्चो! अब आप समझ गये होंगे कि एक परिणाम की आसक्ति का कितना दुःखदायी फल मिलता है तो हमारे परिणामों को सुन्दर बनाने के लिये हमें देव-शास्त्र-गुरू और ज्ञानी व्यक्तियों की संगति में रहना चाहिये तभी हमारा भविष्य सुन्दर होगा।

- आर्यिका सुशीलमति माताजी

पृष्ठ क्रमांक - का शेष भाग

चार प्रकार के देवों में दस प्रकार के विशेष भेद होते हैं -

1. इन्द्र - इनमें अणिमा आदि ऋद्धियाँ, रूप और वैभव की मुख्यता होती है, इनकी आज्ञा अन्य देव मानते हैं, इनके समान ऋद्धियाँ अन्य देवों में नहीं पाईं जातीं। **2. सामानिक** - आज्ञा और ऐश्वर्य को छोड़कर स्थान, आयु, शक्ति, परिवार, भोग-उपभोग आदि में इन्द्र के समान होते हैं वे सामानिक कहलाते हैं। ये पिता, गुरु और शिक्षक के समान होते हैं। **3. त्रायस्त्रिंश** - ये मंत्री और पुरोहित के समान इन्द्र को सलाह देते हैं। ये सभा में 33 ही होते हैं। **4. पारिषद** - ये सभा में मित्र और स्नेहीजनों के समान होते हैं। **5. आत्मरक्ष** - ये अङ्ग के रक्षक के समान होते हैं। **6. लोकपाल** - ये देव द्वारपाल के समान होते हैं। **7. अनीक** - ये सेना के समान पैदल, घोड़े, बैल, रथ, हाथी, गन्धर्व और नर्तकी का रूप धारण करते हैं। **8. प्रकीर्णक** - ये गांव और शहरों की प्रजा के समान होते हैं। **9. आभियोग्य** - ये देव दास के समान वाहन हाथी-घोड़ा आदि का रूप धारण कर सेवा देते हैं। **10. किल्विषिक** - ये देव इन्द्र की सभा में नहीं आ सकते, बाहर

विशेष - व्यन्तर और ज्योतिषियों में त्रायस्त्रिंश और लोकपाल नहीं होते हैं।(तत्वार्थसूत्र 4/5)

- शेष वर्णन आगामी अंक में ।

पाप करते समय दुनिया हंसती है और फल भोगते समय रोती है।

ऐसे मनायें रक्षा बन्धन

आपको पता ही है कि आगामी 29 अगस्त को रक्षाबन्धन पर्व आने वाला है और इस दिन को पूरे देश में भाई-बहन के पर्व के रूप में जाना जाता है। परन्तु आपको यह भी मालूम होना चाहिये कि जैन शासन के अनुसार सैकड़ों वर्ष पूर्व हस्तिनापुर नगरी में मुनि विष्णुकुमारजी के द्वारा आचार्य अकम्पन आदि सातसौ मुनिराजों की रक्षा करने के कारण इस दिन को रक्षाबन्धन पर्व या वात्सल्य पर्व के नाम से जाना जाता है। लेकिन आश्चर्य है अधिकांश जैन समाज के लोग इस दिन को भाई-बहन, राखी-गिफ्ट के नाम तक सीमित करके मुनियों की इस हृदय विदारक घटना को भूल जाते हैं। इस दिन को हमें विशेष भक्ति-पूजन-आराधनापूर्वक मनाना चाहिये।

कैसे मनायें यह पर्व -

1. रक्षाबन्धन पर्व के सात दिन पूर्व ही मुनियों उपसर्ग की घटना को याद करते हुये सात दिन के लिये अपनी प्रिय वस्तु का त्याग करें।
2. प्रतिदिन सोने के पूर्व सात सौ मुनिराजों को वन्दन अवश्य करें।
3. प्रतिदिन मुनिराजों की विशेष भक्ति करें और त्रिकालवर्ती साधुओं की मंगल आराधना की भावना भायें।
4. प्रतिदिन मुनिराजों के आहार समय के बाद अर्थात् लगभग 11 बजे भोजन करें।
5. पर्व वाले दिन जिनमन्दिर में मुनिराजों की विशेष पूजन करें।
6. सभी साधर्मियों को वात्सल्यपूर्वक रक्षासूत्र बांधें।
7. यदि पाठशाला चलती हो तो वहाँ अथवा आसपास के बच्चों को मिष्ठान्न वितरण करें।
8. भाई-बहनें राखी बन्धन के समय जीवन के उत्थान के लिये एक प्रतिज्ञा लें। जैसे - अष्टमी और चतुर्दशी को रात्रि में अन्न-जल का त्याग।
9. रात्रि में भी जिनमन्दिर जायें और प्रवचन आदि का लाभ लें अन्यथा स्वयं स्वाध्याय-भक्ति करें।

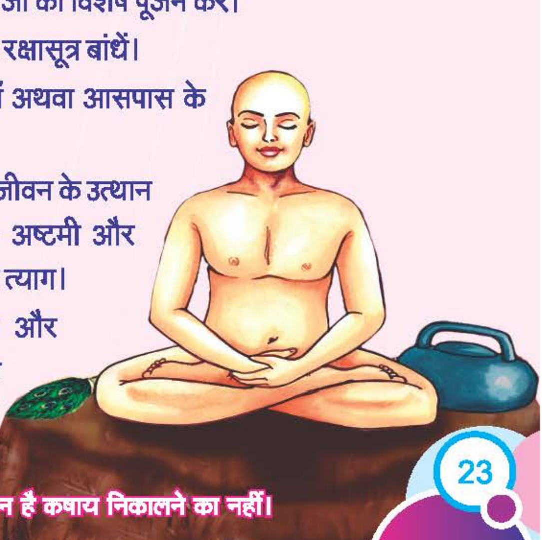

सीख

पापा! आप मेरे लिये क्या लाये हो ?

मैं तुम्हारे लिये एक खास गिफ्ट लाया हूँ। अपनी आंखें बन्द करो और अपने हाथ आगे करो।

लो आंख बन्द कर लीं पापा! और हाथ भी आगे कर लिये, अब दो मेरा गिफ्ट....।

ये लो... मैं तुम्हारे लिये लाया इतनी बड़ी बन्दूक...।

बन्दूक....। ये मुझे नहीं चाहिये पापा...।

पर क्यों बेटा..। मैं तुम्हारे लिये इतनी दूर से और इतने प्यार से लाया हूँ...।

पर पापा! ये बन्दूक तो हिंसा का खिलौना है, इससे पाप लगेगा..।

अरे बेटा! ये सचमुच की बन्दूक नहीं है, खिलौना है और हाँ ! इससे जब कोई मरेगा ही नहीं तो हिंसा का पाप क्यों लगेगा.. ।

पापा! जब हम इससे खेलेंगे तो हमारे परिणामों में मारने के भाव आयेंगे ना। हम मरने और मारने का खेल करेंगे तो हिंसा का पाप लगेगा ही..। हमें ऐसे खेल ही नहीं खेलना जिसमें हिंसा की बात भी आती हो।

बहुत बड़ी-बड़ी बातें करने लगा हो, इतनी बड़ी बातें कहाँ सीखकर आ गया?

हमारी पाठशाला में हमने हिंसा का पाठ पढ़ा था। तब दीदी ने बताया कि हिंसा के भाव से हिंसा के पाप बन्ध होता है। तभी मैंनें नियम ले लिया कि आज के बाद से ऐसे कोई गेम नहीं खरीदूँगा और खेलूँगा जिसमें हिंसा होती है।

अरे वाह बेटा! आज तक हम तुम्हें अच्छी बातें सिखाते थे पर आज तुमने मुझे ही इतनी अच्छी बात सिखा दी। सॉरी बेटा! और प्रॉमिस करता हूँ कि अब कभी भी ऐसे हिंसा के गेम न लाऊँगा, न ही किसी को गिफ्ट दूँगा। ओके...।

थैंक्यू पापा।

- विराग शास्त्री

वे कौन थे ...

1. वे कौन थे जिन्होंने अपनी माँ से कहा था कि यदि तुम जैन धर्म स्वीकार नहीं करोगी तो मैं तुम्हारे हाथ का भोजन नहीं करुँगा ?

उत्तर - क्षुल्लक गणेश प्रसाद वर्णी

2. वे कौन थे जो आहार दान के प्रभाव तीर्थंकर शांतिनाथ हुये थे ?

उत्तर - राजा श्रीषेण

3. वे कौन थे जिन्होंने कहा था कि मांसाहारी डॉक्टर से फोड़े का ऑपरेशन नहीं करवाऊँगा ?

उत्तर - क्षुल्लक गणेश प्रसादजी वर्णी ।

4. वे कौन थे जिन्होंने बादशाह अकबर से मांस के आहार का त्याग करवाया था ?

उत्तर - सूरि हरिविजय महाराज।

5. वे कौन थे जो णमोकार मंत्र के प्रभाव से बैल से मनुष्य बने थे?

उत्तर - वृषभ ध्वज।

6. वे कौन थे जिन्होंने अपनी नवविवाहिता 8 पत्नियाँ के साथ दिगम्बर दीक्षा ली थी?

उत्तर - जम्बू कुमारजी ।

7. वे कौन थे युद्ध स्थल पर ही वैराग्य हो गया था ?

उत्तर - राजा मधु।

8. वे कौन थे जिनने मुनि रामचन्द्र पर उपसर्ग किया था?

उत्तर - स्वयंप्रभ देव।

9. वे कौन थे जो आहार दान की अनुमोदना से कबूतर से चक्रवर्ती बने थे ?

उत्तर - हिरण्यवर्मा।

10. वे कौन थे जिनने अपनी मृत्यु के छः दिन पहले ही अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी कर दी थी ?

उत्तर - पण्डित दौलतरामजी।

11. वे कौन थे जिनके 60,000 पुत्रों ने एक साथ दीक्षा ली थी?

उत्तर - सगर चक्रवर्ती।

12. वे कौन थे जिनने चन्दनबाला को वेश्या बाजार से खरीदा था?

उत्तर - वृषभदत्त सेठ।

यहाँ ज्यादा मत उलझो, यहाँ हम मुसाफिर हैं मालिक नहीं।

स्वर्गवासी मैगी

देश के अधिकांश लोगों की प्रिय वस्तु मैगी आखिरकार विदा हो गई। हम इस पत्रिका के माध्यम से कई बार बता चुके थे कि मैगी का सेवन मांसाहार होने के साथ शरीर के लिये अत्यंत हानिकारक है। हमारे इस अनुरोध पर बहुत सारे बच्चों ने मैगी का आजीवन त्याग किया।

भारत सरकार के फूड एण्ड सेफ्टी विभाग के द्वारा एवं भारत के विभिन्न राज्यों के कराई गई जांच में मैगी में स्वाद बढ़ाने वाले एमएसजी और सीसे की मात्रा तय सीमा से अधिक पाई गई। कुछ नमूनों में मोनासोडियम ग्लूटामेट मिला। भारत के साथ नेपाल, सिंगापुर और ब्रिटेन के साथ अनेक देशों में मैगी पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

सीसा अर्थात् लेड एक तरह का मेटल - इसका उपयोग मकान बनाने में, बैटरी, रेडिएशन प्रोटेक्शन, बंदूक की गोली और छर्रे बनाने में होता है।

इसके उपयोग से किडनी फेल होने का खतरा, बच्चों की मांसपेशियों व हड्डियों के विकास रुक जाने, एकाग्रता में कमी, दिमाग कमजोर होने से समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

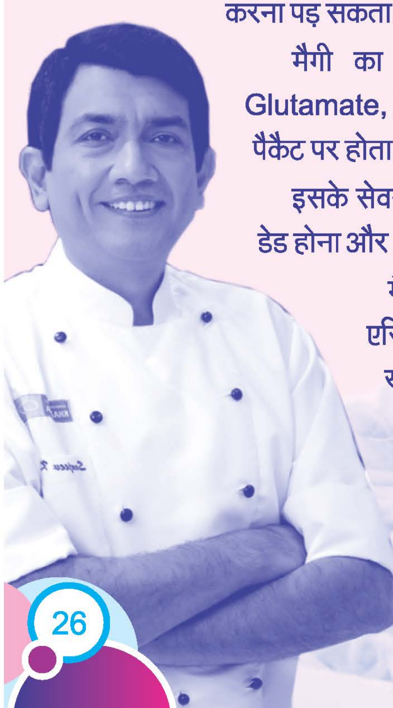

मैगी का दावा है कि मैगी में MSG, Mono sodium Glutamate, फ्लेवर एसेंट बिलकुल नहीं है। इसका उल्लेख मैगी के पैकैट पर होता है परन्तु जांच में मैगी में MSG पाया गया।

इसके सेवन से माइग्रेन, पसीना आना, लाल दाने, चेहरे की स्किन डेड होना और कैंसर तक की संभावना होती है।

मैगी में स्वाद बढ़ाने वाला E-635- नॉन वेज कैटेगरी का एसिड डाला जाता है। इसके डालने से मीठा, नमकीन, खट्टा, तीखा टेस्ट होता है। यह मुख्यतः सुअर या अन्य जानवरों के मांस और मछली के एंजाइम या चर्बी के मिश्रण से बनता है। इसमें कई बार बैक्टीरिया भी यूज होता है।

भारत के प्रसिद्ध शेफ संजीव कपूर का कहना है

अपने हित की सोचो, किसी का अहित मत विचारो।

कि कोई भी डॉक्टर मैगी खाने की सलाह नहीं देता।मैगी के फ्लेवर में E-635 सोडियम डायसोडिया केमिकल होता है। ये MSG तरह अमिनो एसिड वाला नॉन वेज वेरिएंट है। यह मांस और मछली से बनता है। मैगी के पैकेट पर लिखा हुआ No Added MSG दावा गलत है।

वर्तमान की परिस्थितियों में भारत में बिक्री को पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया गया है। अनेक प्रकार की जांच चल रहीं हैं, नेस्ले कम्पनी की ओर से इस सम्बन्ध में कोर्ट में याचिका भी दी गई है। हो सकता है कि सरकार के कड़े संकल्प न होने से इसकी बिक्री फिर से चालू हो जाये परन्तु समझदारी यही है कि इस मांसाहारी पदार्थ को भोजन से सदैव के लिये निकाला जाये।

कुछ स्थानों पर नेस्ले के दूध पाउडर में कीड़े पाये गये, डेयरी मिल्क चॉकलेट में अंदर भी कीड़े मिले। अमिताभ बच्चन के डॉयलाग कुछ मीठा हो जाये के स्थान पर कहीं यह मीठा जहर न बन जाये तो पहले ही सावधान हो जाईये।

- दैनिक भास्कर में प्रस्तुत रिपोर्ट के आधार पर

भूल गया

घर में टीवी आया, मैं पढ़ना ही भूल गया
घर में गाड़ी क्या आई, मैं चलना ही भूल गया
हाथ में मोबाइल आया, मैं पत्र लिखना ही भूल गया
केलक्युलेटर जब से आया, मैं गिनना ही भूल गया
एयर कंडीशन जब से आया, पेड़ की ठंडक भूल गया
शहर में जबसे आया , मिट्टी की सुंगध भूल गया
गन्दे फिल्म के दृश्यों में, मुनि की सुन्दरता भूल गया
जग की आपाधापी में, जिनमंदिर जाना भूल गया
क्षणिक सुख की चाहत में, शाश्वत सुख को भूल गया

सफल व्यक्ति हर दिन अपना लक्ष्य नहीं बदला करते।

सावधान

आपके पास मारुति हो या बीएमडब्ल्यू रोड तो वही रहेगी
आप इकॉनामी क्लास में सफर करें या बिजनेस क्लास में, आपका गंतव्य नहीं बदलेगा
आप टाइटन पहनें या रोलेक्स, समय वही रहेगा
आपके पास एप्पल हो या लावा, आपको फोन करने वाले लोग नहीं बदलेंगे
भव्य जीवन की लालसा रखने में या जीने में कोई बुराई नहीं
लेकिन सावधान रहें ताकि जरुरत का स्थान लालच कभी न ले पाये
क्योंकि जरुरत पूरी हो सकती हैं तृष्णा नहीं ।
दुनिया का कड़वा सच -
पैसे वालों की अधिकांश ताकत ये बताने में खर्च हो जाती है वे पैसे वाले हैं।।

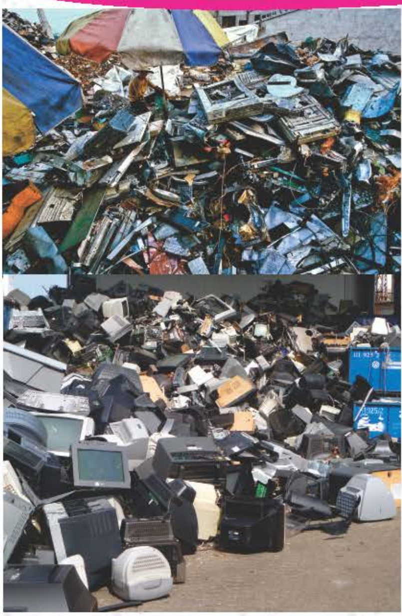

पिछले वर्ष हमारे इस छोटे से संसार ने 410 लाख टन का इलेक्ट्रिक एवं इलेक्ट्रानिक कचरा उत्पन्न किया। इसका अधिकतर भाग विकसित देशों ने पैदा किया। इस कचरे की मात्रा का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि अगर 11 लाख भारी ट्रक एक लाइन में खड़े करें तो 23000 किलोमीटर लम्बी लाइन लग जायेगी।

क्या इस कचरे को उत्पन्न करने में हमारा भी कुछ योगदान है

जैन धर्म के परिग्रह, अनर्थदण्ड एवं आवश्यकतानुसार उपभोग के सिद्धान्त को न मानने का दुष्परिणाम है। दुनिया की की छोड़ें हम जैनों का तो प्रथम कर्तव्य है कि हम अपनी जीवन शैली में परिर्वतन लाकर विश्व को मार्गदर्शन प्रदान करें।

साभार - अशोक बड़जात्या,
राष्ट्रीय अध्यक्ष, दिगम्बर जैन महासमिति

पतंग उड़ाने से ये हुआ नुकसान आप इन्हें देखकर खुश हैं या दुःखी निर्णय आपके पास

आप नया पतंग खरीद लोगे पर
इनकी जान कौन वापस लायेगा
और इन पक्षियों के पंख
कौन वापस लायेगा
अपने शौक के लिये किसी के
जीवन से खिलवाड़ न करें...

अब तो जरा विचार...

इन बच्चों को देखिये पूर्व में किये पाप कार्यों का फल इस रूप में मिला। इस बच्ची को देखिये। दो सप्ताह पूर्व मुम्बई में इसका जन्म हुआ और इसे बूढ़ी बच्ची कहा जाता है। एक विचित्र बीमारी के कारण इसकी चमड़ी सिकुड़ी हुई है। इसके माता-पिता ने इसका पालन पोषण करने से साफ मना कर दिया। अब इसके दादा इसे बकरी का दूध पिलाकर इस प्यार दे रहे हैं।

नीचे दो बच्चों को देखिये इनका जन्म हुआ तो इनके अंग ज्यादा थे। ये है विराधना का फल।

तृष्णावान व्यक्ति तब तक धन के पीछे भागता है जब तक उसका निधन नहीं हो जाता।

ये भी सोचिये...

उर्वी को अपने मम्मी-पापा के साथ पार्टी में जाना था, लेकिन उर्वी उनसे नाराज होकर बैठ गई, तब माँ ने पूछा-

अपने को आत्मा न देखना ही अपराध है।

ऐसा नहीं है। जब से तेरा जन्म हुआ तब से मम्मी-पापा ने सभी तरह से तेरी देखभाल की है।
मैं नहीं मानती।
दादाजी अपनी अलमारी में से एक एल्बम ले आते हैं।
उर्वी, बैठ। मैं तुझे तेरे बचपन के फोटो दिखाऊँ। देख, मम्मी तुम्हें हाथ पकड़कर चलना सिखा रही हैं। तू गिर नहीं जाए इसलिए कितना ध्यान रख रही है!
फिर इसमें तुझे खाना खिला रही हैं, नहला रही हैं।
पापा तुझे घुमाने ले जा रहे हैं, परीक्षा के वक्त पढ़ा रहे हैं।
उर्वी ने पूरा एल्बम देख लिया। फोटो देखकर उर्वी का दिल भर आया।

कल जब तू स्कूल से भूखी आई थी, तब बगलवाली आन्टी ने तुझे नाश्ता दिया था, तू उनका उपकार मानती है न?
हाँ, मानती ही हूँ न? मैंने उन्हें 'थैन्क यू' भी कहा था।
जिसने एकबार तेरा ध्यान रखा उसका इतना उपकार तू मानती है, तो मम्मी-पापा ने अब तक तेरे लिए कितना कुछ किया है? तो उनका कितना उपकार कहलाएगा!
उर्वी सोच में पड़ गई।
तूने देखा? तूने पार्टी के लिए मना किया तो वे भी पार्टी में नहीं गए। यदि तू नाराज़ रहे तो वे कैसे खुश रह सकते हैं?
जो हमारी खुशी में ही खुश रहते हैं, उन्हें हम दुःख कैसे दे सकते हैं? बल्कि हमें तो इस तरह रहना चाहिए कि उन्हें खुशी हो।
दादाजी, आपकी बात सही है। मुझसे गलती हो गई।
उर्वी तुरंत उठकर तैयार हो गई।
मम्मी-पापा, मैं तैयार हूँ। चलो हम पार्टी में चलें। बाय दादाजी।
हाँ। बाय।

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक टस्ट, मुम्बई द्वारा जिनवाणी संरक्षण के क्षेत्र में अभिनव पहल

क्या आपके यहाँ धार्मिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं ?

क्या उन पत्र-पत्रिकाओं की यथा-योग्य विनय नहीं कर पा रहे हैं ?

क्या आप अपने घर या जिनमंदिर में एकत्रित पत्र-पत्रिकाओं का योग्य समाधान चाहते हैं तो अब आप निश्चिंत हो जाईये।

जिनवाणी संरक्षण केन्द्र

अनेक विद्वानों एवं प्रबुद्ध साधर्मियों के विचारों के अध्ययन के पश्चात् हमारी संस्था ने आपके इस विकल्प के उचित समाधान के लिये जबलपुर में जिनवाणी संरक्षण केन्द्र की स्थापना की है जिसके माध्यम से इन पत्र-पत्रिकाओं का उचित समाधान किया जायेगा। आप अपनी पुरानी पत्र-पत्रिकायें हमें भेज सकते हैं।

कैसे भेजें पत्र-पत्रिकायें -

- सर्वप्रथम आप हमसे सम्पर्क करें।
- आप अपनी सुविधानुसार पत्र-पत्रिकायें व्यवस्थित रुप से पैकिंग करके जबलपुर आने वाले ट्रांसपोर्ट/कोरियर/बस पार्सल द्वारा भेज सकते है । पार्सल भेजने के तुरंत बाद आप बिल्टी नं. आदि की संपूर्ण जानकारी हमें अवश्य दें अथवा हमारे मोबाईल नं. पर व्हाटस एप पर बिल्टी की फोटो भेज दें ।
- जिन नगरों में हमारे प्रतिनिधि नहीं हैं वहाँ के साधर्मी हमसे सम्पर्क करके अपनी पत्र-पत्रिकायें सीधे हमें भेज सकते हैं। ग्रन्थ, साहित्य, सीडी आदि स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

साथ ही ये निवेदन भी स्वीकार करें -

- यदि आपके परिवार के अनेक सदस्यों के नाम से एक ही पत्र-पत्रिका आती है अथवा एक सदस्य के नाम से एक से अधिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं तो सम्बन्धित पत्रिका के प्रबंधक से विशेष अनुरोध करके अतिरिक्त प्रति बंद करायें।
- जिन पत्र-पत्रिकाओं को आपके परिवार में कोई नहीं पढ़ता उन्हें भी बंद करायें।

यह प्रयास करके आप परोक्ष रूप से जिनवाणी के विनय में सहभागी बन सकते हैं।

आशा है दिगम्बर जैन समाज के साधर्मी जिनवाणी संरक्षण की इस पवित्र भावना में सहयोग प्रदान करेंगे।

हमारा पता - जिनवाणी संरक्षण केन्द्र

316, मिश्र बन्धु कार्यालय के सामने,मेन रोड, दीक्षितपुरा, जबलपुर (म.प्र.)

संयोजक - विराग शास्त्री, मो. 9300642434 Email- kahansandesh@gmail.com

निवेदक

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक टस्ट, विले पारले, मुम्बई